शोध मंथन Vol. XIV No.II Apr.-June 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

वृद्धावस्था : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (पहाड़ी एवं मैदानी क्षेत्रों के वृद्धो पर आधारित)

प्राप्तिः 02.06.2023
स्वीकृतः 24.06.2023

37

प्रो० रविन्द्र बंसल
समाजशास्त्र विभाग
बरेली कॉलेज, बरेली

हेमन्त कुमार दीक्षित
शोधार्थी
बरेली कॉलेज, बरेली
एम०जे०पी०आर० विश्वविद्यालय, बरेली
ईमेलः *hemantkumardixit@gmail.com*

सारांश

यह तुलनात्मक समाजशास्त्रीय अध्ययन पहाड़ी और मैदानी क्षेत्रों में रहने वाले वृद्धों के बीच अंतर की जांच करता है। अध्ययन अतीत में किए गए विभिन्न अध्ययनों और सर्वेक्षणों से माध्यमिक डेटा स्रोतों का उपयोग करता है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य उन सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों की पहचान करना है जो पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले बुजुर्गों को मैदानी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों से अलग करते हैं। अध्ययन का उद्देश्य उन चुनौतियों और अवसरों की पहचान करना भी है जो वृद्धों को इन दो अलग–अलग भौगोलिक क्षेत्रों में सामना करना पड़ता है।

अध्ययन डेटा का विश्लेषण करने के लिए एक तुलनात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करता है जो दो क्षेत्रों के बीच समानता और अंतर को उजागर करता है। विश्लेषण में शिक्षा आय स्वास्थ्य और सामाजिक समर्थन नेटवर्क जैसे समाजशास्त्रीय कारकों की एक श्रृंखला शामिल है। इसके अतिरिक्त अध्ययन वृद्धों के जीवन में परिवार और समुदाय की भूमिका को देखता है और यह पहाड़ी और मैदानी क्षेत्रों के बीच कैसे भिन्न होता है।

अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि पहाड़ी क्षेत्रों में वृद्धों की स्वास्थ्य सुविधाओं शिक्षा और सामाजिक समर्थन नेटवर्क तक मैदानी क्षेत्रों के वृद्धों की तुलना में कम पहुंच होती है। यह पहाड़ी क्षेत्रों में भौतिक अलगाव और सीमित बुनियादी ढांचे के कारण है। हालांकि अध्ययन में यह भी पाया गया कि पहाड़ी क्षेत्रों में वृद्धों के पास मजबूत पारिवारिक और सामुदायिक संबंध होते हैं जो उन्हें सुरक्षा और अपनेपन की भावना प्रदान करता है। इसके विपरीत मैदानी क्षेत्रों में वृद्धों की शिक्षा स्वास्थ्य सुविधाओं और सामाजिक समर्थन नेटवर्क तक अधिक पहुंच होती है लेकिन शहरीकरण और आधुनिकीकरण के कारण वे अधिक सामाजिक अलगाव और विखंडन का भी अनुभव करते हैं।

कुल मिलाकर यह अध्ययन पहाड़ी और मैदानी क्षेत्रों में वृद्धों के सामने आने वाली अनूठी चुनौतियों और अवसरों पर प्रकाश डालता है। इस शोध के निष्कर्ष नीति निर्माताओं और शोधकर्ताओं को इन दो क्षेत्रों में वृद्ध आबादी का समर्थन करने के लिए अधिक लक्षित और प्रभावी हस्तक्षेप विकसित करने में मदद कर सकते हैं।

मुख्य शब्द

वृद्धों, मैदानी क्षेत्रों, पहाड़ी क्षेत्रों, स्वास्थ्य, सामाजिक।

परिचय

बुढ़ापा जीवन का एक अनिवार्य चरण है, भारत में बेहतर चिकित्सा सुविधाओं और मृत्यु दर में कमी के कारण वृद्धों की आबादी तेजी से बढ़ रही है। यह जनसांख्यिकीय बदलाव समाज के लिए विभिन्न चुनौतियों और अवसरों का कारण बनता है और किसी भी समाज के लिए अपने वृद्धों के लिए आवश्यक समर्थन और देखभाल प्रदान करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। भारत में वृद्धों की आबादी 2011 में 77 मिलियन से बढ़कर 2026 तक 173 मिलियन होने की उम्मीद है। यह शोध पत्र उत्तरी भारत के दो पड़ोसी राज्य उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों और उत्तर प्रदेश के मैदानी क्षेत्रों में रहने वाले 60 वर्ष और उससे अधिक आयु के वृद्धों की शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक स्थिति एवं उनकी संवेदनाओं का तुलनात्मक समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करता है। उत्तराखंड राज्य की आबादी 11 मिलियन है जिनमें से 11.6% बुजुर्ग है (भारत की जनगणना 2011)। उत्तर प्रदेश 220 मिलियन की आबादी के साथ भारत का सबसे अधिक आबादी वाला राज्य है, जिनमें से 8.6% बुजुर्ग है(भारत की जनगणना 2011)। क्षेत्र में बुजुर्गों के पास अगणित चुनौतियां और अवसर हैं, जो उनके जीवन को आकार देते हैं ।यह अध्ययन का उद्देश्य उन चुनौतियों और अत्यल्प अवसरों का विस्तार से पता लगाना है।

पद्धति

यह अध्ययन सरकारी रिपोर्ट, भारतीय जनगणना, राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण, सरकारी रिपोर्ट, शोध लेखों, गैर–सरकारी संगठन की रिपोर्ट, ऑनलाइन डेटाबेस सहित विभिन्न स्रोतों से एकत्र किए गए माध्यमिक डेटा पर आधारित है

वृद्धों की शिक्षा

शिक्षा समाज और देश के विकास की रीढ़ होती है। वृद्धों का शिक्षा स्तर उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो उनके समग्र विकास को निर्धारित करता है। पहाड़ी क्षेत्रों में मैदानी क्षेत्रों की तुलना में वृद्धों का शिक्षा स्तर अपेक्षाकृत कम है। 2011 की भारत की जनगणना के अनुसार उत्तराखंड राज्य के पहाड़ी क्षेत्रों में वृद्धों की साक्षरता दर 56.3% थी, जबकि उत्तर प्रदेश राज्य के मैदानी क्षेत्रों में यह 62.6% थी। साक्षरता दर में अंतर के कई कारण हो सकते हैं जैसे शैक्षिक संस्थानों तक पहुंच की कमी, कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के कारण, आर्थिक स्थिति के कारण एवं बच्चों का कृषि गतिविधियों में अधिक शामिल होना। पहाड़ी क्षेत्रों में आर्थिक स्थिति मैदानी क्षेत्रों के अपेक्षाकृत खराब है, इसके विपरीत मैदानी क्षेत्रों में शैक्षिक सुविधाओं की उपलब्धता और स्कूलों तक आसान पहुंच के कारण वृद्धों का शिक्षा स्तर अपेक्षाकृत अधिक है। उत्तराखंड राज्य क्षेत्र में कई बुजुर्ग अशिक्षित हैं या उनके शिक्षा का स्तर कम है। इसका प्राथमिक कारण राज्य के पहाड़ी क्षेत्रों में शैक्षिक बुनियादी ढांचे की कमी है। इस क्षेत्र के कई गांवों में स्कूल नहीं हैं, और दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले बुजुर्ग लोगों की शिक्षा तक सीमित पहुंच है।

चुनौतियों के बावजूद उत्तराखंड के पहाड़ी इलाकों में बुजुर्गों की शिक्षा में सुधार के प्रयास हुए हैं। उत्तर प्रदेश राज्य में एक अच्छी तरह से विकसित शिक्षा प्रणाली है, और इस क्षेत्र में अनेकों स्कूल और कॉलेज हैं। हालांकि उत्तर प्रदेश के मैदानी इलाकों में बुजुर्गों की पढ़ाई अभी भी चिंता का विषय बनी हुई है इस क्षेत्र

में कई बुजुर्ग अशिक्षित हैं या शिक्षा का स्तर कम है। इसका प्राथमिक कारण सामाजिक और सांस्कृतिक मापदंड हैं जो बुजुर्ग लोगों को शिक्षा प्राप्त करने से हतोत्साहित करता हैं। इस क्षेत्र के बहुत से बुजुर्गों का मानना है कि शिक्षा केवल युवा पीढ़ी के लिए है और वे नई चीजें सीखने के लिए बहुत बूढ़े हो चुके हैं।

उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड सरकार ने बुजुर्गों के बीच शिक्षा और साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न नीतियों और कार्यक्रमों को लागू किया है। राज्य सरकार ने राज्य के विभिन्न जिलों में वरिष्ठ नागरिक शिक्षा केंद्र स्थापित किए हैं, जो बुजुर्गों को शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। ये केंद्र बुनियादी साक्षरता, कंप्यूटर कौशल और व्यावसायिक प्रशिक्षण पर पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं।

वृद्धों का स्वास्थ्य

वृद्धों की स्वास्थ्य स्थिति एक और महत्वपूर्ण पहलू है जिस पर विचार करने की आवश्यकता है। मैदानी क्षेत्रों में पहाड़ी क्षेत्रों की तुलना में वृद्धों की स्वास्थ्य स्थिति अपेक्षाकृत खराब है। इसके विपरीत पहाड़ी क्षेत्रों में स्वच्छ हवा और प्राकृतिक परिवेश की उपलब्धता और स्वास्थ्य सेवाओं तक आसान पहुंच के कारण वृद्धों की स्वास्थ्य स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर है। उत्तराखंड में जीवन प्रत्याशा भी अधिक है, उत्तर प्रदेश में 68.5 वर्ष की तुलना में वृद्ध वयस्क औसतन 72.5 वर्ष जीवित रहते हैं (भारत की जनगणना, 2011)। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 2019–20 के अनुसार मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी पुरानी बीमारियों से पीड़ित वृद्धों का प्रतिशत उत्तर प्रदेश राज्य के मैदानी क्षेत्रों की तुलना में उत्तराखंड राज्य के पहाड़ी क्षेत्रों में अधिक है। इसके विपरीत, उत्तर प्रदेश (राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, 2020) में तपेदिक, दस्त और वेक्टर जनित रोगों की व्यापकता अधिक है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय के एक अध्ययन के अनुसार उत्तराखंड के ग्रामीण क्षेत्रों में 22% वृद्धों ने पुरानी बीमारी से पीड़ित होने की सूचना दी, जबकि उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में 16% वृद्धों ने शिकायत की। उत्तराखंड के पहाड़ी इलाकों में वृद्ध लोग ठंडी जलवायु और अधिक ऊंचाई के कारण सांस और हृदय रोगों की चपेट में अधिक है। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार मैदानी इलाकों की तुलना में पहाड़ी क्षेत्रों में वृद्ध लोगों में क्रोनिक ऑब्स्ट्रक्टिव पलमोनरी डिजीज (C.O.P.D.) का प्रसार अधिक था। उत्तराखंड में वृद्ध वयस्कों के पास उत्तर प्रदेश की तुलना में बेहतर मानसिक स्वास्थ्य परिणाम हैं। W.H.O (2017) के अनुसार, उत्तर प्रदेश की तुलना में उत्तराखंड में वृद्ध वयस्कों में अवसाद का प्रसार कम है। उत्तराखंड का पहाड़ी इलाका वृद्ध वयस्कों के बीच अधिक शारीरिक गतिविधि को प्रोत्साहित करता है, जिससे वृद्धों का स्वास्थ्य बेहतर होता है। Thakur et al. (2018)के एक अध्ययन में पाया गया कि उत्तराखंड में वृद्ध वयस्कों में उत्तर प्रदेश की तुलना में शारीरिक गतिविधि का स्तर काफी अधिक था। उत्तराखंड में स्वच्छ हवा और प्राकृतिक परिवेश इस क्षेत्र में वृद्ध वयस्कों के बेहतर स्वास्थ्य में योगदान देते हैं। Yadav et al. (2020) के एक अध्ययन में उत्तर प्रदेश में वृद्ध वयस्कों के बीच वायु प्रदूषण से श्वसन संबंधी बीमारियों को अधिक पाया गया। कम जनसंख्या घनत्व, बेहतर सड़क संपर्क और अधिक संख्या में स्वास्थ्य सुविधाओं के कारण उत्तराखंड में स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच आम तौर पर बेहतर है। उत्तराखंड में 5 किमी के भीतर स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच वाले वृद्ध लोगों का प्रतिशत 80.6% है, जबकि उत्तर प्रदेश में, यह केवल 62.4% है (Census of India 2011)। उत्तर प्रदेश में प्रत्येक 2,065 लोगों पर एक डॉक्टर की तुलना में उत्तराखंड में प्रत्येक 1,675 लोगों पर एक डॉक्टर हैं। (World Bank, 2021).

वृद्धों की परिवार और समाज में स्थिति

बुढ़ापा जीवन का एक अनिवार्य चरण है जिसका सामना हर व्यक्ति को करना पड़ता है यह

एक ऐसी अवस्था है, जब लोग शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर होते हैं और अपनी जरूरतों के लिए दूसरों पर निर्भर होते हैं। परिवार और समाज में वृद्धों की स्थिति एक आवश्यक पहलू है जिस पर विचार करने की आवश्यकता है। आंकड़ों से पहाड़ी और मैदानी क्षेत्रों में वृद्धों की स्थिति में महत्वपूर्ण अंतर का पता चलता है। भारत में वृद्ध जनों को पारंपरिक रूप में समाज में उच्च दर्जा दिया जाता है और उन्हें ज्ञान के भंडार के रूप में सम्मानित किया जाता रहा है, हालांकि बदलते समय के साथ यह स्थिति कम हो रही है खासकर शहरी क्षेत्रों में। ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्ध जनों को अभी भी उच्च दर्जा प्राप्त है खासकर उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों में जहां संयुक्त परिवार प्रणाली प्रचलित है। इन क्षेत्रों में वृद्ध जनों को अभी भी परिवार का मुखिया माना जाता है और उनके निर्णयों को सम्मान दिया जाता हैप पहाड़ी क्षेत्रों में वृद्ध लोगों को उनके परिवारों द्वारा छोड़ जाने या उपेक्षित होने की संभावना कम होती है उनके साथ बहुत सम्मान के साथ व्यवहार किया जाता है इसके विपरीत उत्तर प्रदेश के मैदानी क्षेत्र में संयुक्त परिवार प्रणाली बिखर गई है , एकल परिवार संरचना और बदलते मूल्यों ने वृद्धों की स्थिति में गिरावट का कारण बना है। वृद्ध लोगों की स्थिति में आर्थिक कारक भी सबसे अधिक भूमिका निभाते हैं। गरीबी और संसाधनों की कमी वृद्ध लोगों की उपेक्षा का कारण बनते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप समाज में वृद्धों की स्थिति में गिरावट आई है और वृद्धों को उपेक्षा का सामना करते हुए उन्हें बोझ माने जाने लगा है। मैदानी क्षेत्रों में वृद्धों को अपने परिवार से परित्याग और उपेक्षा का सामना करने की अधिक संभावना रहती है जिसके कारण वे वृद्धाश्रमों में रहने को मजबूर होते हैं। हेल्प एज इंडिया द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार उत्तर प्रदेश में 53% वृद्धों ने बताया कि वह अपने परिवारों द्वारा उपेक्षित महसूस करते हैं।

वृद्धों की संवेदनाएं

भौगोलिक क्षेत्र और संस्कृति के आधार पर वृद्धों की संवेदनाएं व्यापक रूप से भिन्न होती है। संवेदनाएं व्यक्तियों के सांस्कृतिक मूल्यों, विश्वासों और दृष्टिकोण को संदर्भित करती है। उत्तराखंड अपने पहाड़ी इलाके के लिए जाना जाता है, जो अपने निवासियों के बीच अलगाव और आत्मनिर्भरता की भावना पैदा कर सकता है। इसके विपरीत, उत्तर प्रदेश के मैदानी इलाके अपनी उपजाऊ भूमि के लिए जाने जाते हैं, जिससे एक मजबूत कृषि अर्थव्यवस्था और इसके निवासियों के बीच समुदाय की अधिक भावना पैदा हुई है। उत्तराखंड में, बुजुर्गों को अपने बच्चों और पोते–पोतियों के साथ रहने की अधिक संभावना थी, जबकि उत्तर प्रदेश में, वे अकेले या अपने जीवनसाथी के साथ रहने की अधिक संभावना रखते थे। इस अंतर को उत्तराखंड में परिवार पर सांस्कृतिक जोर देने के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जहां कई पीढ़ियां अक्सर एक छत के नीचे रहती हैं। इसके विपरीत, उत्तर प्रदेश में उपलब्ध अधिक आर्थिक अवसरों ने बुजुर्गों के बीच अधिक स्वतंत्रता को जन्म दिया होगा।उत्तराखंड के बुजुर्गों में उत्तर प्रदेश के अपने समकक्षों की तुलना में आध्यात्मिकता और धार्मिकता की अधिक भावना थी। उत्तराखंड का पहाड़ी इलाका कई धार्मिक स्थलों का घर है, और बुजुर्गों ने इन स्थानों से एक मजबूत संबंध महसूस किया। इसके विपरीत, उत्तर प्रदेश में बुजुर्गों ने महसूस किया कि धर्म का व्यवसायीकरण हो गया है और उसने अपना आध्यात्मिक सार खो दिया है। उत्तराखंड राज्य के पहाड़ी क्षेत्रों में एक ऊबड़–खाबड़ इलाका है, और रहने की स्थिति चुनौतीपूर्ण है। नतीजतन, बुजुर्ग आबादी शारीरिक रूप से अधिक सक्रिय होती है, जो उन्हें अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करती है। उत्तराखंड राज्य के पहाड़ी क्षेत्रों में वृद्ध लोग भावनात्मक रूप से अपनी परंपराओं, अपने परिवार, अपनी जमीन और संस्कृति से जुड़े हुए हैं। वे परिवार और समाज के

साथ अपने संबंधों को महत्व देते हैं । उनके पास समुदाय और अपनेपन की एक मजबूत भावना होती है, जो उन्हें बुढ़ापे की चुनौतियों का सामना करने में मदद करती है। दूसरी ओर उत्तर प्रदेश राज्य के मैदानी क्षेत्रों में अपेक्षाकृत समतल इलाके हैं, और पहाड़ी क्षेत्रों की तुलना में रहने की स्थिति अधिक आरामदायक है। नतीजतन, बुजुर्ग आबादी शारीरिक रूप से कम सक्रिय है, जिससे स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त, मैदानी क्षेत्रों में अधिक प्रदूषित वातावरण होता है, जो उनके स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। उत्तर प्रदेश के मैदानी इलाकों में वृद्ध लोग शहरीकरण और आधुनिकता से अधिक प्रभावित होते हैं, और वे अधिक व्यक्तिवादी और भौतिकवादी होते हैं, वे बदलते पारिवारिक संरचनाओं और आर्थिक दबावों के कारण अलगाव और अकेलेपन का सामना करते हैं तथा उन में समुदाय और अपनेपन की कमजोर भावना रहती है जो उनके भावनात्मक और मानसिक कल्याण को प्रभावित करता है। ऊबड़–खाबड़ इलाके और ठंडी जलवायु की विशेषता वाले उत्तराखंड की अनूठी भौगोलिक विशेषताएं, वृद्ध व्यक्तियों के बीच अलग–अलग संवेदनाओं में योगदान करती हैं। उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों में, कृषि और पर्यटन अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। इन क्षेत्रों में कई बुजुर्ग व्यक्तियों के पास सीमित वित्तीय संसाधन हैं, जो छोटे पैमाने पर खेती या पेंशन पर निर्भर हैं। हालांकि, पर्यटकों की आमद ने कुछ आर्थिक अवसर पैदा किए हैं, कुछ बुजुर्ग व्यक्ति अपनी आय के पूरक के लिए पर्यटन से संबंधित गतिविधियों में संलग्न हैं।

उत्तर प्रदेश के मैदानी इलाके, अपने शहरी केंद्रों और विविध आर्थिक गतिविधियों के साथ, एक विपरीत परिदृश्य प्रस्तुत करते हैं। इन क्षेत्रों में बुजुर्गों को अक्सर बेरोजगारी, अपर्याप्त पेंशन योजनाओं और सामाजिक सुरक्षा लाभों तक सीमित पहुंच से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अनौपचारिक क्षेत्र बुजुर्ग व्यक्तियों के रोजगार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसमें कई सड़क विक्रेताओं के रूप में काम करते हैं या अन्य कम भुगतान वाली नौकरियों में संलग्न होते हैं। पहाड़ी क्षेत्रों को अक्सर पहुंच, स्वास्थ्य सेवाओं और बुनियादी ढांचे के विकास से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो पुराने निवासियों की भलाई और संवेदनाओं को प्रभावित करते हैं। इसके विपरीत, उत्तर प्रदेश के मैदानी क्षेत्र पहुंच और बुनियादी ढांचे के मामले में अधिक अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं, जो वृद्ध लोगों की संवेदनाओं को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।

निष्कर्ष

यह तुलनात्मक समाजशास्त्रीय अध्ययन उत्तराखंड राज्य के पहाड़ी क्षेत्रों और उत्तर प्रदेश राज्य के मैदानी क्षेत्रों में रहने वाले वृद्धों की शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवार और समाज में स्थिति एवं उनकी संवेदनाओं में अंतर पर प्रकाश डालता है। अध्ययन से पता चलता है कि मैदानी क्षेत्रों में वृद्धों की शिक्षा तक पहुंच बेहतर है जबकि पहाड़ी क्षेत्रों वृद्धों में शिक्षा का स्तर कम है।सरकार और गैर–सरकारी संगठनों को दूरस्थ और वंचित क्षेत्रों में शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए महत्वपूर्ण प्रयास करने चाहिए। बुजुर्गों को शिक्षा तक आसान पहुंच होनी चाहिए, और उनकी शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए उचित बुनियादी ढांचा और सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए। वृद्धों में साक्षरता दर बढ़ाने के लिए जागरूकता अभियान चला चलाकर सरकार द्वारा खोले गए वरिष्ठ नागरिक शिक्षा केंद्र में जाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। अध्ययन से पता चलता है कि पहाड़ी क्षेत्रों में वृद्धों की परिवार और समाज में भूमिका मैदानी क्षेत्रों के वृद्ध जनों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण होती है। अध्ययन से यह भी पता चलता है कि पहाड़ी क्षेत्रों में वृद्ध जनों को पारंपरिक

मूल्यों और प्रथाओं से अधिक लगाव है जबकि मैदानी क्षेत्रों में वृद्धों का अधिक आधुनिक दृष्टिकोण है । समाज में वृद्धजनों की भलाई सुनिश्चित करने के लिए पारंपरिक मूल्यों और संयुक्त परिवार प्रणालियों को बढ़ावा देने के प्रयास किए जाने चाहिए।परिवार के सदस्यों को वृद्धों की देखभाल करने और उन्हें भावनात्मक और वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए तथा वृद्धों को सामाजिक गतिविधियों और सामुदायिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। समाज को वृद्धों के महत्व और समाज में उनके योगदान के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए। अंत में, उत्तराखंड राज्य के पहाड़ी क्षेत्रों और उत्तर प्रदेश राज्य के मैदानी क्षेत्रों में वृद्ध लोगों की संवेदनाओं का यह तुलनात्मक समाजशास्त्रीय अध्ययन उनके सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण में कुछ महत्वपूर्ण अंतर प्रकट करता है। पहाड़ी क्षेत्रों में बुजुर्ग अधिक समुदाय–उन्मुख, शारीरिक रूप से सक्रिय और अपनी सांस्कृतिक विरासत में निहित हैं, जबकि मैदानी क्षेत्रों में लोग अधिक व्यक्तिवादी, कम सक्रिय और समर्थन के लिए अपने परिवारों पर कम निर्भर हैं। यह अध्ययन उन नीतियों और हस्तक्षेपों को डिजाइन करने में बुजुर्ग आबादी के सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण को समझने के महत्व पर प्रकाश डालता है जो उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। उत्तराखंड में बुजुर्ग आबादी उत्तर प्रदेश के अपने समकक्षों की तुलना में अधिक पारंपरिक और रूढ़िवादी दृष्टिकोण रखती है। पहाड़ी इलाके और ग्रामीण जीवन शैली ने उत्तराखंड में बुजुर्ग आबादी के बीच अधिक अलग–थलग और आत्मनिर्भर जीवन शैली में योगदान दिया है। उत्तराखंड में बुजुर्गों का अपनी भूमि और समुदाय से गहरा लगाव है और वे बदलाव के लिए अधिक प्रतिरोधी हैं। इसके विपरीत, उत्तर प्रदेश में बुजुर्ग आबादी अधिक महानगरीय है और परिवर्तन के लिए अनुकूलनीय है। शहरीकरण और वैश्वीकरण ने उत्तर प्रदेश में बुजुर्ग आबादी की संवेदनाओं को प्रभावित किया है, और वे नए विचारों और जीवन शैली के लिए अधिक खुले हैं। अध्ययन से पता चलता है कि पहाड़ी क्षेत्रों और मैदानी क्षेत्रों में बूढ़े लोगों की संवेदनाएं काफी भिन्न होती हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में बुजुर्गों में समुदाय की एक मजबूत भावना है और उनकी भूमि और संस्कृति के साथ घनिष्ठ संबंध है। वे समर्थन और देखभाल के लिए अपने परिवार और रिश्तेदारी संबंधों पर भरोसा करते हैं। इसके विपरीत, मैदानी क्षेत्रों में बुजुर्ग अधिक व्यक्तिवादी हैं और पेंशन योजनाओं और सरकारी कल्याण कार्यक्रमों जैसे बाहरी सहायता प्रणालियों पर भरोसा करते हैं। इस अध्ययन के निष्कर्ष वृद्ध जनों के जीवन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं मानसिक कल्याण की गुणवत्ता में सुधार के लिए रणनीति विकसित करने में नीति निर्माताओं और शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ

1. Smith, J. (2017). *Journal of Aging and Society*. 37(2). Pg. **120-135.**
2. Singh, R. (2020). *Journal of Aging and Society*. 40(1). Pg. **55-68.**
3. Kumar, A. (2021). *Journal of Aging and Society*. 42(2). Pg. **189-204.**
4. Gupta, S. (2022). *International Journal of Aging and Human Development*. 94(4). Pg. **367-382.**
5. Srivastava, Alok. (2016). *Indian Journal of Gerontology*. vol. 30. no. 4. Pg. **456-472.**
6. Mishra, Pramod. (2016). *International Journal of Humanities and Social Science Invention*. vol. 5. no. 6. Pg. **49-55.**

7. Singh, Sunita. (2018). *Journal of Sociology and Social Anthropology*. vol. 9. no. 2. Pg. **129-143.**
8. Agarwal, Sumit. (2017). *Journal of Gerontology and Geriatric Research.* vol. 6. no. 4. Pg. **1-7.**
9. (2011). Census of India. "Population Enumeration Data." Office of the Registrar General and Census Commissioner, Ministry of Home Affairs, Government of India. http://www.censusindia.gov.in/2011census/population_enumeration.html.
10. (2015-16). National Family Health Survey. "State Fact Sheets." Ministry of Health and Family Welfare. Government of India. http://rchiips.org/NFHS/factsheet.shtml.
11. United Nations Development Programme. "Human Development Reports." United Nations, 2016. http://hdr.undp.org/en/data.
12. Singh, P., Pant, A. (2018). *International Journal of Geriatric Nursing*. 2(1). Pg. **12-25.**
13. Kumar, A., Mishra, S. (2020). *Journal of Population Ageing*. Pg. **1-20.**
14. Gupta, R., Srivastava, S. (2019). *International Journal of Social Sciences and Humanities.* 7(2). Pg. **100-115.**
15. Sharma, R., Singh, S. (2021). *Journal of Aging and Social Policy*. Pg. **1-16.**
16. Smith, J. P. (2023). S. Johnson (Ed.). Proceedings of the International Conference on Sociology. Springer. Pg. **100-115.**
17. Gupta, Kavita. (2021). *Journal of Social Gerontology and Geriatrics*. vol. 2. no. 1. Pg. **12-26.**
18. Singh, Vikram. (2022). *International Journal of Sociology and Social Policy*. vol. 8. no. 3. Pg. **56-71.**
19. Sharma, Rajeev. (2023). *Ageing International*. vol. 4. no. 2. Pg. **33-47.**
20. Agrawal, S. (2019). *Indian Journal of Gerontology*. 33(3). Pg. **311-326.**
21. Chakravarty, S. (2017). *Journal of Social Sciences and Humanities*. 1(2). Pg. **43-56.**
22. Sharma, N. (2018). *Journal of Community Health Management*. 5(2). Pg. **22-36.**
23. Singh, R. (2020). *International Journal of Sociology and Social Policy*. 40(9/10). Pg. **888-903.**
24. Government of India. (2019). "Elderly in India 2016." Ministry of Statistics and Programme Implementation. Government of India.
25. Government of Uttarakhand. (2019). "Uttarakhand at a Glance." Directorate of Economics & Statistics. Government of Uttarakhand.
26. Government of Uttar Pradesh. (2019). "Uttar Pradesh at a Glance." Directorate of Economics & Statistics. Government of Uttar Pradesh.

27. HelpAge India. (2018). "Status of Elderly in Uttar Pradesh 2017." Help.
28. (2015-16). National Family Health Survey-4. India. Uttarakhand and Uttar Pradesh state fact sheets. Retrieved from. https://www.rchiips.org/nfhs/factsheet.shtml.
29. Aging in India: Challenges and Opportunities. United Nations Population Fund. Retrieved from. https://india.unfpa.org/en/publications/aging-india-challenges-and-opportunities
30. India"s National Policy on Senior Citizens. Retrieved from https://socialjustice.nic.in/writereaddata/UploadFile/National%20Policy%20on%20Senior%20Citizens.pdf.
31. Kothari, A. (2019). An assessment of the elderly population in India. *International Journal of Social Science and Humanities Research*. 7(2). Pg. **20-27.**
32. Sharma, N., Nautiyal, N. (2016). A study of the elderly population in Uttarakhand. *International Journal of Social Science and Humanities Research*. 4(2). Pg. **145-152.**
33. Singh, R., Singh, M. (2017). Social and economic status of elderly people in Uttar Pradesh.
34. (2019-20). National Family Health Survey (NFHS). https://www.nfhs india.org.
35. Das, A., Das, B. (2017). Status of elderly in rural India: A sociological analysis. *International Journal of Social Sciences*.
36. United Nations. (2019). World Population Prospects 2019: Highlights. Retrieved from. https://population.un.org/wpp/Publications/Files/WPP2019_10 KeyFindings.pdf.
37. Bhagat, R.B., Kumar, S. (2014). The status of elderly in India. *Journal of Aging Research & Healthcare*. 2(2). Pg. **1-5.**
38. Gupta, S. (2016). Ageing in India: An overview. *Indian Journal of Gerontology*. 30(3). Pg. **348-365.**
39. "Aging in Rural India: Perspectives from a State on the North West Frontier." Ageing International 28. no. 1. Pg. **200-206.**
40. Agarwal, S. (2016). Elderly Care in India: Sociological Perspectives. New Delhi: Routledge.
41. Bhatt, R. (2017). The Elderly in Rural Uttarakhand: A Study of Their Life and Livelihood. Oxford University Press: New Delhi.
42. Giri, A. (2015). Health and Nutritional Status of Elderly in Uttar Pradesh. *Indian Journal of Gerontology*. 29(3). Pg. **332-340.**